27-3-20 ओम् शान्ति मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अचल अडोल स्थिति में स्थित रह, शक्तिशाली योग के वायब्रेशन फैलाने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आज अमृतवेले से हम सब अपनी मीठी दादी जानकी जी के अव्यक्तारोहण का समाचार सुनते, ड्रामा की भावी को साक्षी होकर देख रहे हैं, सबके अन्दर यही भावना है कि हम दादी जी के अन्तिम दर्शन तो करें, लेकिन .... पूरे विश्व की परिस्थितियां ड्रामानुसार ऐसी हुई हैं, जो घर में रहने वाले भी सम्मुख नहीं पहुंच सकते इसलिए चाहते हुए भी हम केवल योग का ही सहयोग दे सकते हैं। दादी जी सदा कहती थी मैं बाबा को कहती हूँ कि मेरी अर्थी पर एक रूपया भी खर्च न हो। बाबा तो अपने मुरब्बी बच्चों के दिल की आवाज को सुनते ही हैं। आज दादी जी के ऐसे कुछ अनमोल महावाक्य जो समय प्रति समय हम उनके मुख से सुनते आये हैं, आपको भेज रहे हैं, आप इन्हें पढ़ते हुए वाह बाबा, वाह ड्रामा की भावी, समझ सदा अपने स्थान से ही स्नेह की पुष्पांजलि अर्पित करना जी।

2-3-09

सर्वशक्तिवान मेरा साथी है, मात पिता, सखा, स्वामी, सतगुरू है। यह सिर्फ भावना नहीं है इसका प्रैक्टिकल अनुभव है। देह के सम्बन्धी तो विनाशी हैं, आज नहीं तो कल न यह हमारे रहेंगे, न हम इनके रहेंगे। जब अर्थी उठेगी तो न यह घर मेरा रहेगा, न सम्बन्धी रहेंगे... जिसको मेरा समझते वही घर से बाहर कर देंगे। मेरा तो एक दूसरा न कोई। मैं जब शरीर छोडूंगी तो एक ही साथी होगा, मैं जिंदा होते सबको छोड़कर बैठी हूँ। कहती हूँ – ना तू मेरी, ना मैं तेरी।

26-0-09

हमने तो अपना विल लिख लिया है, जैसे मैं शुरू से ही एकॅनामी एकानामी से चली हूँ, ऐसे सदा ही एकव्रता रहूंगी। एक भी पैसा मेरी अर्थी पर भी खर्च न हो। मुझे कोई फूल माला नहीं चाहिए। सदा ध्यान रहा है कि मैं और मेरा बाबा, तीसरा कोई बीच में आ नहीं सकता। जैसे बाबा ने कहा है अगर तीसरा कोई बीच में आया तो तीसरा नेत्र बंद हो जायेगा। तो सदा यही ध्यान रहा है कि मेरे बीच में कोई भी तीसरा न आये।

9-1-14

एक मिनट, एक सेकेण्ड भी यह फीलिंग नहीं है मैं आत्मा अकेली हूँ, देह से भी न्यारी हूँ, मीठे बाबा ने जनक नाम से पक्का करा लिया – ट्रस्टी और विदेही। ट्रस्टीपने में जरा भी कभी मैं नहीं समझती हूँ। सदा ध्यान रखा है न सेन्टर मेरा है, न स्टूडेन्ट मेरा है। मेरा कोई नहीं। मैं मेरा से फ्री हूँ। मैंने यह काम किया, यह भी नहीं कह सकते हैं, मैंने क्या किया है? हाँ, इतना जरुर है एक

बल एक भरोसा, निश्चय बुद्धि विजयंती, बना हुआ था सो हुआ। सिर्फ संकल्प आया यह होना चाहिए, हुआ, हो गया। बाबा ने किया, कराया इसमें सिर्फ मेरी भावना रही। भावना से सारी विश्व की सेवा हो रही है।

21-9-14

बाबा ने सभी के नाम चेंज किये पर मेरा नाम नहीं चेंज किया। मेरे को कहा जनक माना विदेही रहने की प्रैक्टिस और ट्रस्टी। विदेही रहना माना अशरीरी बनने का अन्दर ही अन्दर ऐसा अभ्यास करना, यह सदा मुझे याद रहता है। कार्य-व्यवहार में होते हुए भी कैसे न्यारे और प्यारे रहें। मैं जब विदेश में गई तो और कुछ नहीं डोन्ट वरी नो प्रॉब्लम, यही पाठ पक्का किया।

24-6-15

मुझे खुशी है मैंने जनक नाम की लाज रखी है। कभी मैंने नहीं कहा कि यह मेरा है, मेरा कुछ नहीं। मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। हमारे सभी बहन भाईयों ने यह मंत्र अच्छा पक्का किया जो मन में यही भावना है कि मुझे ट्रस्टी और विदेही रहना है। मरना जीना कोई बड़ी बात थोड़ेही है, पर मरना है तो कैसे? जीना है तो कैसे? यह सदा ध्यान पर रखा है।

22-8-15

आज सुबह को मैं मरने की तैयारी में थी माना अन्तिम घड़ी मेरी ऐसी हो, ऐसी स्थिति में थी। मेरी बात सुनो ना। आप कहेंगे ऐसे नहीं बोलो, मैं कहेंगी मैं तैयार तो रहेंगी ना! मरना है तो खुशी से तैयारी करके मरना चाहिए। अचानक ऐसे न मर जाऊं।

18-2-19

बाबा ने हम सबको सिखा दिया है कि जीवन जीना है तो कैसे? अगर आज मर जाऊं तो भी कैसे? शरीर तो छूटना ही है, इस देह को तो छोड़ना ही है, यह तो सबको पता है ना। हर एक ड्रामा को जानकरके सदा निश्चिंत रहते हैं ना! जो बीता सो सब ड्रीम हो गया, बाबा ने यह बहुत अच्छा तरीका सिखाया है जो बीती वो ड्रामा, जो होगा वो ड्रामा। अभी जो ड्रामा में सीन है बड़ी सुन्दर है तो इसका मजा ले लो। शान्ति मेरा स्वधर्म है, खुशी मेरा स्वरूप है। मुझे तो मैं कौन और मेरा कौन की मस्ती चढ़ी हुई है यानी उड़ती कला में उड़ रही हूँ। अच्छा - ओम् शान्ति।